

किताब और अहद का खून

तौरत : हिजरत 24:1-18

तब अल्लाह ताअला ने मूसा^(अ.स) से कहा, “तुम उस जगह के पास आओ जहाँ से मेरी आवाज़ आ रही है। हारून^(अ.स), नदाब, अबीहू, और बाकी सत्तर रहनुमा दूर से ही इबादत करें।⁽¹⁾ ए मूसा^(अ.स), सिर्फ़ तुम ही पास आना, बाकी के सरदार और लोग इस जगह के पास ना आएं।⁽²⁾ मूसा^(अ.स) ने लोगों को अल्लाह ताअला का हुक्म सुनाया और सारी बातें समझाईं। सारे लोगों ने एक ही जवाब दिया, “हम अल्लाह ताअला का हर हुक्म मानेंगे जो वो हमसे चाहता है।”⁽³⁾

मूसा^(अ.स) ने अल्लाह ताअला के कलाम को लिखा। वो सुबह जल्दी उठे और उन्होंने उसी पहाड़ की चढ़ाई के पास एक चबूतरा बनाया। उस चबूतरे में बारह खम्बे थे। जिनका मतलब इब्रानियों के बारह खानदान थे।⁽⁴⁾ तब उन्होंने इब्रानियों में से कुछ जवान लोगों को चुना ताकि वो अल्लाह ताअला को जानवरों के भुने गोश्त की कुर्बानी पेश कर सकें। उन जानवरों में गाय के बच्चे की कुर्बानी भी दी गई ताकि अल्लाह ताअला और इब्रानी लोगों के बीच अमन कायम हो सके।⁽⁵⁾ मूसा^(अ.स) ने कुर्बानी का खून एक कटोरे में रखा और आधे खून को चबूतरे पर छिड़क दिया।⁽⁶⁾ मूसा^(अ.स) ने अहद की किताब को उठाया [जिसमें अल्लाह ताअला का कलाम लिखा हुआ था] और ज़ोर से पढ़ा ताकि सब लोग उसे सुन सकें।

सब लोगों ने एक साथ कहा, “अल्लाह ताअला ने जो कुछ भी कहा है हम उस पर अमल करेंगे और हम कहना मानने वाले लोग होंगे।”⁽⁷⁾ मूसा^(अ.स) ने कुर्बानी का खून जो कटोरे में था, लोगों के ऊपर छिड़का और कहा, “देखो, ये अहद का खून है जो अल्लाह ताअला ने तुमसे किया है। ये अल्लाह ताअला का कलाम है और इस किताब में यही लिखा है।”⁽⁸⁾

मूसा^(अ.स) अल्लाह की उस जगह के और करीब चले गए [जहाँ से वो लोगों को पैगाम दे रहे थे]। हारून^(अ.स), नदाब, अबीहू, और बाकी के सत्तर लोग भी मूसा^(अ.स) के साथ गए।⁽⁹⁾ उन लोगों ने देखा कि अल्लाह रब्बुल आलमीन अपने नूर को ज़ाहिर कर रहा है। उनको ऐसा लगा कि अल्लाह ताअला एक नीलम पत्थर से बने हुए तख्त पर है जो बिल्कुल आसमान की तरह साफ़ है।⁽¹⁰⁾ लेकिन अल्लाह ताअला ने इब्रानी रहनुमाओं पर अज़ाब नाज़िल नहीं किया और वो लोग अल्लाह ताअला का नूर देखने के बाद भी खा-पी रहे थे।⁽¹¹⁾ अल्लाह ताअला ने मूसा^(अ.स) से कहा, “मेरे पास ऊपर पहाड़ पर आओ और वहीं रुको। मैं तुमको अपना हुक्म पत्थर की स्लेटों पर लिख कर दूँगा ताकि तुम लोगों को सिखा सको।”⁽¹²⁾

मूसा^(अ.स) अपने सहाबी योशुआ के साथ ऊपर गए। मूसा^(अ.स) ने पहाड़ के ऊपर चढ़ना शुरू किया जहाँ पर अल्लाह ताअला अपने नूर को ज़ाहिर कर रहा था।⁽¹³⁾ उन्होंने दूसरे रहनुमाओं से कहा, “तुम सब योशुआ और मेरे वापस आने का इंतज़ार करो और तब तक यहीं रुको। हारून^(अ.स) और जनाब हूर यहाँ मौजूद हैं तो अगर किसी को अल्लाह ताअला के हुक्म के बारे में कोई सवाल पूछना है तो वो उनसे पूछ सकता है।”⁽¹⁴⁾ जैसे ही मूसा^(अ.स) ने पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया तो बादलों ने उनको ढक लिया।⁽¹⁵⁾

अल्लाह ताअला का नूर सीना' के पहाड़ पर चमकता रहा और उस पहाड़ को बादलों ने छः दिन तक ढक कर रखा। सातवें दिन अल्लाह ताअला ने बादलों के पर्दे से मूसा^(अ.स) से बात करी।⁽¹⁶⁾ जब अल्लाह ताअला ने अपना नूर ज़ाहिर किया तो इब्रानी लोगों को ऐसा लगा कि पहाड़ के ऊपर आग भड़क रही है।⁽¹⁷⁾ मूसा^(अ.स) पहाड़ पर चढ़े और फिर बादलों में गायब हो गए। वो वहाँ पर चालीस दिन और चालीस रात रुके।⁽¹⁸⁾